अनुभव 8

क्यों दूर हैं बच्चे किताबों से

लता पाण्डे*

बच्चों में किताबें पढ़ने की नैसर्गिक ललक होती है। लेकिन न तो हमारे विद्यालय और न ही हमारे पुस्तकालय बच्चों में निहित इस नैसर्गिक ललक को पहचानते हैं और उसे बढ़ावा देने के अवसर देते हैं। बच्चों के लिए पुस्तकालय में बाल-कोना हो तो बच्चे बड़े ही चाव से किताबें पढ़ते हैं। ऐसा ही एक अनुभव यहाँ दिया जा रहा है—

पुस्तकों के स्रोत हैं - पुस्तकालय और पुस्तकालय का ज़िक्र आते ही मानस-पटल पर जो तस्वीर उभर कर आती है, वह है बड़ी-बड़ी बंद अलमारियों में रखी किताबें, शांत वातावरण, बड़ी-बड़ी मेज़ों पर फैले अखबार, पत्र-पत्रिकाएँ, सिर नीचे किए चुपचाप बैठे किताबें पढ़ते लोग, किताबें लेने और वापिस करने के लिए बने काउंटर पर बैठा व्यक्ति और पुस्तकालय की संपूर्ण व्यवस्था को देखने के लिए एक ओर रखी मेज कुर्सी पर या कोने में बने कक्ष में विराजमान लाइब्रेरियन। इनमें से लगभग नब्बे प्रतिशत पुस्तकालयों में बच्चों के लिए तो कुछ होता ही नहीं है। अगर किसी पुस्तकालय में बच्चों के लिए किताबें होती भी हैं तो उनमें से अधिकांश में ऐसा कुछ नहीं होता है जो बच्चों को अपनी ओर आकर्षित करे। किताबें भी अलमारियों में इस तरह से कैद होती है कि बच्चे स्वयं उन्हें छूकर, स्वयं उलट-पलटकर नहीं निकाल पाते हैं। जब तक नन्हा पाठक स्वयं किताब के पन्ने नहीं पलटेगा, चित्रों का आनंद नहीं उठाएगा, तब तक अपनी पसंद की किताब कैसे चुन सकता है? अपनी मनपसंद किताब पढ़े बिना बच्चे का किताब से नाता बन ही नहीं सकता।

बच्चों और किताबों के बीच दोस्ती का रिश्ता देखा स्वीडन की एक चिल्ड्रन पब्लिक लाइब्रेरी में। नंवबर 2007 में स्वीडन प्रवास के दौरान स्टॉकहोम में चिल्ड्रन पब्लिक लाइब्रेरी जाने का सुयोग मिला। लाइब्रेरी में पहुँचते ही देखा कि दो शिक्षकों के साथ कुछ बच्चे

* *एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली-110016

लाइब्रेरी में प्रवेश कर रहे हैं। हमने भी बच्चों के साथ लाइब्रेरी में प्रवेश किया। लाइब्रेरी में चारों ओर रंग-बिरंगी किताबों से सजे सुंदर डिज़ाइन के छोटे-छोटे खूबसूरत रैक थे। कुछ बाक्सनुमा रैक भी थे, जिनमें किताबें रखी थीं। कक्ष में घुसते ही बच्चे किताबों की ओर लपके। वे किताबें उठाते, पन्ने उलटते-पलटते, चित्र निहारते और किताब मन को भाती तो उसे अपने नन्हे हाथों में थाम पास रखी कुर्सी या बेंच पर बैठ जाते। एक बच्ची बड़े मनोयोग से बड़ी-सी कहानी की किताब देख रही थी, तभी एक बच्चा आया और उसके साथ बैठ गया। दोनों मिलकर किताब का आनंद लेने लगे। एक कोने में रखे रैक से एक नन्हा बच्चा मोटी-सी किताब निकालने की कोशिश कर रहा था।

उस बच्चे को किताब निकालने में परेशानी होती देख साथ आई शिक्षिका पास आईं। हमें लगा कि वे बच्चे को इतनी मोटी किताब निकालने से रोकेंगी। पर हमारी सोच के विपरीत उन्होंने रैक से किताब निकालने में बच्चे की मदद की। किताब निकालकर पास की मेज पर रख दी। बच्चे के चेहरे पर किताब मिल जाने की खुशी स्पष्ट नज़र आ रही थी। बच्चा लपककर कुर्सी पर बैठ गया और लगा किताब को देखने। उस मोटी-सी किताब का आवरण पृष्ठ बेहद आकर्षक था, शायद इसलिए बच्चा उस किताब की ओर आकर्षित हुआ था। वह किताब पशु-पक्षियों से संबंधित जानकारी पर आधारित थी। बच्चा काफी देर तक किताब में बने विभिन्न पशु-पक्षियों के चित्रों का आनंद लेता रहा।

इस कक्ष के अंदर एक ओर कक्ष था, जहाँ बच्चे आ-जा रहे थे। हम भी वहाँ गए। दूसरे कक्ष में प्रवेश करते ही लगा मानो चाँद-सितारों की दुनिया में आ गए हों। नीले रंग से पेंट किए इस कमरे में छत पर चाँद-तारे बने थे। दीवारों पर खूबसूरत चित्र थे। कक्ष एक स्वप्न-लोक का-सा आभास दे रहा था। कमरे में एक अर्धचंद्राकार बेंच रखी थी। नीचे बीचों-बीच चादर बिछी थी। दो बच्चे नीचे चादर पर बैठे बड़ी-सी किताब खोले चित्रों में खोए हुए थे।

लाइब्रेरी में कहीं न कोई रोक-टोक थी न ही किसी प्रकार का बंधन। बच्चों को पूरी आज़ादी थी अपनी पसंद की किताब चुनने की, जितनी देर तक चाहो उस किताब को देखने की, उलटने-पलटने की और पढ़ने की। बच्चे किताब रैक से निकालते, उसे देखते, अगर किताब पसंद न आती तो उसे तुरंत रखकर नयी किताब की ओर लपकते। बच्चे तकरीबन एक घंटे वहाँ रहे। कोई बच्चा सीढ़ी पर बैठा किताब पढ़ रहा था तो कोई कुर्सी पर। कुछ बच्चे नीचे बिछी चादर पर इत्मीनान से बैठे, अधलेटे किताब में मगन थे। उन्हें किसी ने न रोका, न ही टोका। वहाँ कई बच्चे थे, बच्चे आपस में बातें भी करते, एक-दूसरे को किताबें भी दिखाते। शिक्षक भी बच्चों की मदद कर रहे थे, पर किसी भी प्रकार का शोर-गुल नहीं था। अनुशासन के नाम पर बच्चे स्वयं अनुशासित थे क्योंकि वहाँ पर वह सब कुछ था जो एक बच्चा चाहता है। पसंद की किताबें, बच्चों के कद के मुताबिक बनायी गई छोटी-छोटी कुर्सी-मेज़ और रैक। दीवारों पर लगे खूबसूरत

चित्र, इतना ही नहीं एक मेज पर शतरंज भी रखा था। बीच में दो-तीन बच्चे आए, शतरंज की गोटियाँ उठाईं, पाँच-दस मिनट खेल फिर किताबों की ओर चले गए। बच्चे एक अनूठी ही दुनिया में विचरण कर रहे थे- वह दुनिया थी किताबों की दुनिया। बच्चों के साथ आई शिक्षिका से बातचीत करने पर मालूम पड़ा कि वहाँ प्रत्येक विद्यालय में कक्षा में रीडिंग कार्नर में तो किताबें होती ही हैं, इसके साथ ही सप्ताह में एक बार बच्चों को सार्वजनिक पुस्तकालय भी ले जाया जाता है और उस दिन की प्रतीक्षा सभी बच्चे बड़ी बेसब्री से करते हैं।

चिल्ड्रन पब्लिक लाइब्रेरी से हम लौट तो आए पर मन बार-बार वहीं जा रहा था। किताबों से बच्चों का गहरा नाता रह-रहकर आँखों के समक्ष उभर रहा था। साथ ही बरसों से मन के कोने में दबी यह चाह भी फिर उभर आई कि हमारे देश में बच्चों के लिए ऐसे सार्वजनिक पुस्तकालय क्यों नहीं हैं? क्या कारण है कि हम बच्चों के लिए किताबों की ज़रूरत पर ध्यान नहीं देते। बचपन का वह समय जब बच्चा बेहद सक्रिय, उत्साही, और जिज्ञासु होता है उस दौरान किताबों से बच्चे का रिश्ता ही नहीं बनता।

इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि दुर्भाग्य से हममें से अधिकांश इस बात के प्रति जागरूक नहीं हैं कि बच्चे भी किताबों में दिलचस्पी रखते हैं। यही वजह है कि हमारे यहाँ सार्वजनिक पुस्तकालयों की बात तो दूर रही विद्यालयों में भी प्राथमिक स्तर पर पुस्तकालय नहीं होता है। अगर होता भी है तो पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लायक किताबें रखी ही नहीं जाती हैं। इस बारे में शिक्षकों, हेडमास्टरों का यही कहना रहता है- अभी बच्चों ने वर्णमाला तो ठीक से सीखी नहीं है, किताब क्या पढ़ेंगे? जो बच्चे पढ़ना जानते हैं, उनके लिए भी विद्यालय में पुस्तकालय से किताब लेकर पढ़ने की मनाही है। शिक्षकों की यही सोच है कि बच्चा अगर कक्षा में कहानी की किताब पढ़ेगा तो पाठ्यपुस्तक कब पढ़ेगा? पुस्तकालय की किताब बच्चे को घर ले जाने के लिए इस डर से नहीं दी जाती कि बच्चा किताब घर ले जाएगा तो यह बात पक्की है कि किताब या तो गंदी होकर ही वापस आएगी या फटकर। और यहीं से शुरूआत होती है बच्चों और किताबों के बीच एक अदृश्य दूरी के बनने की। इस दूरी के ज़िम्मेदार हम सभी हैं - विद्यालय, शिक्षक, अभिभावक और समाज।

हम यह भूल ही जाते हैं कि बच्चों के लिए किताबें केवल किताबें नहीं है। बच्चों के लिए किताबें बहुत मायने रखती हैं। किताबों में उनकी अलग ही दुनिया बसती है। किताबें उन्हें रोचक कहानियाँ सुनाती हैं, किताबों में वे गीत गुनगुनाते हैं। अपनी मनपसंद किताब में डूबकर बच्चा उतना ही सुख पाता है, जितना सुकून उसे माँ की गोदी में मिलता है। किताबें बच्चों को वह सब कुछ मुहैया कराती हैं, जो वो चाहते हैं। किताबों में उनकी कल्पना पर लगाकर ऊँची उड़ान भरती है। किताब पढ़ते-पढ़ते बच्चे तितली के साथ, दौड़ते हैं, पतंग के साथ आसमान में उड़ते हैं, नाव के साथ नदी में हिलोरें मारते हैं, झूले में बैठ हवा

की सैर करते हैं, रंग-बिरंगे फूलों के साथ बाग-बगीचों में महकते हैं। कोयल की कूहू, पपीहे की पीहू, नदियों की कल-कल, झरने की गुनगुन सुनने को मिलती हैं उन्हें किताबों में। हाथी की चिंघाड़, शेर की दहाड़, चीते की चपलता, खरगोश की चंचलता, लोमड़ी की चालाकी, इन सबकी झलक देकर किताबें बच्चों को उभयारण्य की सैर भी कराती हैं। रेलगाड़ी, मोटरगाड़ी, हवाई जहाज के साथ परीलोक ले जाता उड़नखटोला भी तो है किताबों में। किताबों में आम, आइसक्रीम का आनंद है तो किताबें मनोरंजन करती हैं, किताबें खेल कराती हैं, किताबें बहुत कुछ सिखाती हैं। किताबें बच्चों को भाती हैं, उन्हें लुभाती हैं, अपने पास बुलाती हैं। बस ज़रूरत है, बच्चों को इस संसार में दाखिल कराने की। और सार्वजनिक बाल पुस्तकालय बच्चों को किताबों की दुनिया में ले जाने में अहम भूमिका निभा सकते हैं।

बच्चे तो स्कूल में दाखिल हो गए, अब स्कूल में बच्चे के लिए पुस्तकालय या विद्यालयी पुस्तकालय में पहली-दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए किताबें उपलब्ध कराने की ज़िम्मेदारी स्कूल की है। कई बार शिक्षक तथा प्रधानाध्यापक संसाधनों की कमी का रोना रोते हैं। यूँ तो अब सभी सरकारी विद्यालयों में प्रतिवर्ष टीचिंग लर्निंग मटीरियल के लिए राशि मिलती है। इस राशि के अतिरिक्त थोड़ी-सी सूझ-बूझ और प्रयास से विद्यालयी पुस्तकालय या कक्षा के कोने में पुस्तक कोना बनाने के लिए किताबों का प्रबंध किया जा सकता है। वैसा ही प्रयास जैसा बरसों पहले गिजुभाई ने किया था।

किताबें जुटाते, खरीदते समय इस बात के प्रति सजग होना ज़रूरी है कि किताब बच्चों के मन की हो। हमारे यहाँ प्रचुर मात्रा में बाल साहित्य मौजूद है, लेकिन अगर इन किताबों को देखा जाए तो बहुत कम किताबें ऐसी हैं जो बच्चों के अनुकूल हैं। अधिकतर किताबें सोद्देश्य लिखी जाती हैं। लेखन के दौरान अधिकतर यह सोच हावी रहती है कि इन्हें पढ़ने के बाद बच्चे में देशभक्ति, सत्यनिष्ठा, बड़ों का सम्मान जैसे मूल्य विकसित होंगे। ऐसी किताबें जब बच्चा उठाता है तो उसे वह आनंद नहीं मिलता जिसे पाने के लिए उसने किताब उठाई थी। वही किताबें बच्चों के लिए चुनें जो बच्चों के परिवेश से जुड़ी हों, जिनकी भाषा बच्चों की अपनी भाषा हों, जिनकी विषयवस्तु ऐसी हो जो बच्चों की रोज़मर्रा की ज़िंदगी से जुड़ी हो।

❑❑❑